Gyansindu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

कक्षा 10 – हिंदी

महामैराथन क्लास

गद्यांश+पद्यांश+व्याकरण+संस्कृत+पत्र

प्रश्न-1.'रस मीमांसा' के लेखक है-

(क) महादेवी वर्मा

(ख) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(ग) 'निराला'

(घ) महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न-2. 'तितली' रचना की विधा है:

(क) कहानी (ख) उपन्यास

(ग) नाटक (घ) जीवनी

प्रश्न-3.'साहित्य और कला' रचना है-

(क) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की

(ख) सुमित्रानन्दन पन्त की

(ग) 'भगवतशरण उपाध्याय की

(घ) जयप्रकाश भारती की

प्रश्न-4.'डॉ. राजेन्द्र प्रसाद' लेखक हैं:

(क) गाँधी की देन के

(ख) हिन्दी-साहित्य का इतिहास के

(ग) इन्द्रजाल के

(घ) हिन्दी-साहित्य विमर्श के

प्रश्न-5. शुक्लोत्तर-युग के लेखक हैं-

(क) राधाचरण गोस्वामी

(ख) चतुरसेन शास्त्री

(ग) दौलतराम

(घ) धर्मवीर भारती

प्रश्न-6. रीतिकालीन कवि हैं-

(क) केदार भट्ट

(ख) जायसी

(ग) पद्माकर

(घ) कृष्णदास

प्रश्न-7. 'छत्रसाल दशक' के रचयिता हैं:

(क) मतिराम (ख) भूषण

(ग) घनानन्द (घ) 'हरिऔध'

प्रश्न-8.'तारसप्तक' के सम्पादक हैं-

(क) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(ख) नरेन्द्र शर्मा

(ग) भवानी प्रसाद मिश्र

(घ) केशव

प्रश्न-9. 'सुमित्रानन्दन पन्त की रचना है-:

(क) 'ज्ञानदीप' (ख) युगवाणी'

(ग) 'प्रेमवाटिका' (घ) 'क्षणदा'

प्रश्न-10.'स्मृति की रेखाएँ' साहित्य की विधा है-

(क) जीवनी

(ख) भेंटवार्ता

(ग) संस्मरण

(घ) नाटक

प्रश्न-11.'करुण रस' का स्थायी भाव है:

(क) भय (ख) शोक

(ग) विस्मय (घ) निर्वेद

प्रश्न-12.'पीपर पात सरिस मन डोला'

उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा अलंकार

(ख) रूपक अलंकार

(ग) उत्प्रेक्षा अलंकार

(घ) यमक अलंकार

प्रश्न-13. सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनाऐन, चितइ जानकी लखन तनु।।
उपर्युक्त पंक्ति में कौन-सा छन्द है?
(क) रोला (ख) सोरठा
(ग) सवैया (घ) कण्डलियाण

प्रश्न-14.'अनुचर' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है:
(क) अन (ख) अनु
(ग) अ (घ) आ

★प्रश्न-15. प्रत्यय के प्रकार हैं-

(क) दो
(ख) तीन
(ग) चार
(घ) एक

प्रश्न-16 'वेद-पुराण' में समास है-

(क) द्वन्द्व (ख) द्विगु
(ग) बहुव्रीहि (घ) तत्पुरूष

प्रश्न-17. 'परमोद' शब्द का तत्सम रूप है-

(क) पृमोद (ख) प्रमुद

(ग) प्रमोद (घ) प्रमाद

प्रश्न-18. सत्य कथन बताइए-

(क) स्मृति की रेखाएँ, अतीत के चलचित्र, मेरा परिवार, श्रृंखला की कड़ियाँ आदि रचनाएं महादेवी वर्मा की हैं।

(ख) 'पुनर्नवा' एवं 'अनामदास का पोथा' उपन्यास विधा की रचनाएं हैं। इनके लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं।

(ग) महादेवी वर्मा को रेखाचित्रों में विशेष सफलता मिली है।

(घ) हजारीप्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक थे।

प्रश्न-19. 'तद्' (पुर्लिंग) शब्द का प्रथमा बहुवचन में रूप क्या होगा?

(क) ते (ख) सः

(ग) तौ (घ) ताः

प्रश्न-20. 'तद्' (पुर्लिंग) शब्द का षष्ठी विभक्ति, एकवचन में रूप क्या होगा?

(क) तेभ्यः (ख) सः

(ग) तयोः (घ) तस्य

गद्यांश

(1) एक प्राचीन विद्वान् का विचार है- 'विश्वासपात्र मित्र से बड़ी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाय उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया। 'विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों में हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे तब हमें उत्साहित करेंगे। सारांश यह है कि वे हमें उत्तमतापूर्वक जीवन निर्वाह करने में हर तरह से सहायता देंगे। सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी से अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक पुरुष को करना चाहिए।

अथवा विश्वासपात्र मित्र .....उत्साहित करेंगे।

अथवा विश्वासपात्र मित्र .....कोमलता होती है।

अथवा एक प्राचीन विद्वान्.....उत्साहित करेंगे।

अथवा 'विश्वासपात्र मित्र से ..... तरह से सहायता देंगे। **[801 (DC) 2023]**

प्रश्न – (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ **लिखिए।**

उत्तर: <u>सन्दर्भ -</u> प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'में संकलित पाठ 'मित्रता'से उद्धृत है। इसके रचयिता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

प्रश्न – (ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **<u>प्रथम रेखांकित अंशों की व्याख्या</u>**–आ० शुक्ल के अनुसार, विश्वासपात्र मित्र सदैव विपत्तियों में अपने मित्र की सहायता करके और उसको बुराइयों से बचाकर उसकी सब प्रकार से रक्षा करता है। व्यक्ति को ऐसा मित्र बड़े सौभाग्य से मिलता है। जिस प्रकार से एक अच्छी औषध (दवा) व्यक्ति को भयंकर-से-भयंकर रोग से मुक्ति दिलाकर उसे स्वस्थ और प्रसन्न बनाती है, उसी प्रकार सच्चा व अच्छा मित्र व्यक्ति के

Gyansindu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

दोषों व त्रुटियों को दूर कर तथा प्रत्येक विपत्ति में उसकी सहायता करके उसे सब प्रकार से सुखी और सम्पन्न बनाता है, इसीलिए विश्वासपात्र मित्र को जीवन की औषध भी कहा जाता है।

द्वितीय रेखांकित अंशों की व्याख्या- जिस प्रकार एक कुशल वैद्य अथवा चिकित्सक किसी व्यक्ति के समस्त शारीरिक रोगों को समझकर, उसका निदान करके उसे नीरोगी बनाता है, ठीक उसी प्रकार सच्चा मित्र हमें कुमार्ग से हटाकर अच्छे रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित करता है। वह अपने मित्र से उसके दोषों एवं गलतियों के लिए कटु वचन नहीं कहता, उसकी आलोचना नहीं करता। सच्चा मित्र माता के समान स्नेह, कोमलता और धैर्य का प्रतीक वह माता जैसा स्नेह देकर हमें कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग की ओर ले जाता है। अतः हमें ऐसा प्रयास करना चाहिए कि हमें विश्वासपात्र व सच्चा मित्र प्राप्त हो।

प्रश्न– (iii) विश्वासपात्र मित्र की तुलना किस-किससे की गई है?

अथवा **लेखक ने सच्चे मित्र की तुलना किससे और क्यों की है?**

अथवा **विश्वासपात्र मित्र की तुलना किससे की गई है?**

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

उत्तर- लेखक ने विश्वासपात्र मित्र की तुलना जीवन की औषध से की है। क्योंकि चिकित्सक किसी व्यक्ति के समस्त शारीरिक रोगों को समझकर, उसका निदान करके उसे नीरोगी बनाता है, ठीक उसी प्रकार सच्चा मित्र हमें कुमार्ग से हटाकर अच्छे रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

प्रश्न – ((iv)सच्ची मित्रता कैसी होती है?

उत्तर- सच्ची मित्रता में उत्तम-से-उत्तम वैद्य की-सी निपुणता होती है, उसमें अच्छी से अच्छी माता का-सा धैर्य तथा कोमलता होती है।

प्रश्न – (v) हमें किन लोगों को अपना मित्र बनाना चाहिए?

अथवा **एक सच्चा मित्र किसे कह सकते हैं?**

अथवा **'मित्रता'पाठ के आधार पर विश्वासपात्र मित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**

अथवा **उत्तम मित्र से क्या अपेक्षा रखनी चाहिए?**

अथवा **हमें अपने मित्रों से कौन-सी आशा रखनी चाहिए?**

अथवा **लेखक के अच्छे मित्र के क्या-क्या कर्त्तव्य बताए हैं?**

उत्तर- हमें उन लोगों को अपना मित्र बनाना चाहिए जो उत्तम संकल्पों में हमें दृढ़ रखें, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँ, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करें, कुमार्ग के प्रति सचेत करें और हतोत्साहित होने पर हमें उत्साहित करें।

प्रश्न– (vi) सच्चा मित्र हमारी किस प्रकार सहायता करता है?

उत्तर- सच्चा मित्र उत्तमतापूर्वक जीवन निर्वाह करने में हर संभव हमारी सहायता करता है।

(2) सुन्दर प्रतिमा, मनभावनी चाल और स्वच्छन्द प्रकृति ये ही दो-चार बातें देखकर मित्रता की जाती है; पर जीवन-संग्राम में साथ देने वाले मित्रों में इनसे कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिससे हम स्नेह न कर सकें, जिससे अपने छोटे-मोटे काम तो हम निकालते जाएँ, पर भीतर ही भीतर घृणा करते रहें? मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें; भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति पात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए। ऐसी सहानुभूति जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे। मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो मित्र एक ही प्रकार के कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। इसी प्रकार

प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक या वांछनीय नहीं है। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है। राम धीर और शान्त प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे, पर दोनों भाइयों में अत्यन्त प्रगाढ़ स्नेह था। उदार तथा उच्चाशय कर्ण और लोभी दुर्योधन के स्वभावों में कुछ विशेष समानता न थी, पर उन दोनों की मित्रता खूब निभी।

अथवा मित्र केवल.....मित्रता रही है।

अथवा मित्र केवल .....वांछनीय नहीं है।

अथवा मित्र सच्चे पथ.....मित्रता रही है।

अथवा मित्रता के लिए यह आवश्यक .....मित्रता खूब निभी।

[801 (DE,DG) 2023]

प्रश्न: (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'में संकलित पाठ 'मित्रता'से उद्धृत है। इसके लेखक 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी हैं।

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

प्रश्न – (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- <u>रेखांकित अंश की व्याख्या</u>– आ० शुक्लजी के अनुसार सच्चा मित्र वह नहीं है, जिसके गुणों अथवा कार्यों की हम प्रशंसा तो करते हैं, किन्तु अपने मन से उसे प्रेम नहीं करते हैं। सच्चा मित्र वही है, जिसे हम हृदय से प्रेम करें। यदि किसी व्यक्ति से हम अपने छोटे-मोटे काम तो निकालते रहें, किन्तु मन-ही-मन उसके प्रति घृणा का भाव बनाए रखें तो उसे हम अपना मित्र नहीं कह सकते। मित्र के प्रति यदि मन में सच्चा प्रेम नहीं है तो वह मित्र नहीं है। सच्चे मित्र का एक विशेष गुण है – विश्वसनीयता। मित्र को एक ऐसा पथ-प्रदर्शक होना चाहिए जिसके बताए मार्ग पर चलकर हम अपने जीवन का विकास कर सकें। ऐसा व्यक्ति मित्र कहलाने के योग्य है। अत: मित्र वही है, जो हमारे लिए पूरी तरह विश्वसनीय हो तथा सगे भाई के समान हमारा हितैषी और शुभचिन्तक हो। दो मित्रों के बीच का प्रेम भी कपट तथा स्वार्थ पर आधारित नहीं होना चाहिए। मित्र के लिए सहानुभूति का गुण एक आभूषण के समान है। मित्रों के बीच सहानुभूति का गुण दिखावामात्र नहीं होता, वरन् उनमें सुख-दु:ख के सभी अवसरों पर समान भाव से

सहानुभूति पाई जाती है। मित्रता के लिए यह भी आवश्यक नहीं है कि दो मित्र समान रुचि व समान कार्य से सम्बद्ध हों। दोनों के आचरण एवं देह तथा बुद्धि की प्रकृति भी समान होना आवश्यक नहीं है।

प्रश्न – (iii) मित्रता प्रायः किस आधार पर की जाती है?

उत्तर- किसी की सुन्दर सूरत, मन को लुभानेवाली चाल और स्वच्छन्द स्वभाव के आधार पर ही प्रायः मित्रता की जाती है।

प्रश्न – (iv) किसे मित्र नहीं कहा जा सकता?

उत्तर- जिस व्यक्ति से हम स्नेह नहीं कर सकते, उसे मित्र नहीं कहा जा सकता, भले ही हम उसके गुणों का कितना ही गुणगान क्यों न करें। जिस व्यक्ति से हम अपने छोटे-मोटे काम निकलवाने के बाद भी भीतर ही भीतर उससे घृणा करते हों, उसे भी मित्र नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न – (v) सच्चा मित्र कैसा होना चाहिए?

उत्तर- मित्र ऐसा होना चाहिए, जो व्यक्ति को सच्चे पथ-प्रदर्शक की भाँति सही मार्ग पर चलाए, सब प्रकार से विश्वास के योग्य हो, भाई के समान प्रेम करनेवाला हो और जो हमसे सच्ची सहानुभूति रखे।

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

प्रश्न – (vi) हमारे और हमारे मित्र के बीच कैसी सहानुभूति होनी चाहिए?

उत्तर- मित्र में ऐसी सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए कि एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे।

प्रश्न – (vii) लेखक ने अच्छे मित्र की क्या विशेषताएँ बताई हैं?

उत्तर- लेखक के अनुसार सच्चा मित्र, जो व्यक्ति को सच्चे पथ-प्रदर्शक की भाँति सही मार्ग पर चलाता है, वह सब प्रकार **से विश्वसनीय** होता है, भाई के समान प्रेम करनेवाला और सच्ची सहानुभूति रखनेवाला होता है।

प्रश्न – (viii) राम और लक्ष्मण के स्वभाव में क्या अंतर है?

उत्तर- राम वीर और शांत प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे।

(3) मित्र का कर्त्तव्य इस प्रकार बताया गया है— उच्च और महान् कार्य में इस प्रकार सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी निज की सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।'यह कर्त्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़-चित्त और सत्य-संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए, जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा थां। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

अथवा मित्र का कर्त्तव्य .....पकड़ा था।

अथवा उच्च और महान् कार्य.....धोखा न होगा।

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'मित्रता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या - मित्र के कर्त्तव्य आलोक में हमें दृढ़ चित्त और सत्य-संकल्पवाले लोगों को ही अपना मित्र बनाना चाहिए। मित्र का चुनाव करते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम उसी को अपना मित्र बनाएँ, जो आत्मबल से युक्त हो। श्री रामचंद्र जी की आत्मशक्ति के विषय में विश्वास हो जाने पर ही वानर राज सुग्रीव ने उनका **सहारा लिया** था। श्रीराम की शक्ति के बल पर ही वह अपना राज्य और अपनी पत्नी को प्राप्त कर सका। मित्र का चुनाव करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मित्र ऐसा हो, जिसका समाज में सम्मान हो या जो सत्य में निष्ठा रखनेवाला हो। निष्कपट, सभ्य, परिश्रमी एवं सत्यनिष्ठ मित्र कभी अपने मित्र को धोखा नहीं दे सकता। ऐसे सच्चे मित्र के सहारे हम अपने जीवन का निर्वाह भली-भाँति कर सकते हैं।

प्रश्न- (iii)मित्र का क्या कर्त्तव्य होना चाहिए?

अथवा **मित्र का कर्त्तव्य स्पष्ट कीजिए।**

अथवा **अच्छे मित्र का क्या कर्त्तव्य होना चाहिए?**

अथवा **मित्र का कर्त्तव्य कैसा होना चाहिए?**

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

उत्तर- मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्र का साहस तथा उत्साहवर्द्धन करके उच्च और महान् कार्यों में उसकी इस प्रकार से सहायता करे कि वह अपनी सामर्थ्य से बाहर जाकर उन कार्यों को पूरा करे।

प्रश्न- (iv)मित्र के कर्त्तव्य का निर्वाह कौन-सा व्यक्ति कर सकता है?

उत्तर- दृढ़ चित्त और सत्य-संकल्पवाला व्यक्ति ही मित्र के कर्त्तव्य का निर्वाह कर सकता है।

प्रश्न- (v)हमें मित्र के रूप में किसका पल्ला किस प्रकार से पकड़ना चाहिए?

उत्तर- हमें मित्र के रूप में अपने से अधिक आत्मबलवाले व्यक्ति का पल्ला वैसे ही पकड़ना चाहिए, जिस प्रकार से सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था।

प्रश्न- (vi)मित्र कैसा और क्यों होना चाहिए?

उत्तर- मित्र सत्यनिष्ठ, प्रतिष्ठित, मृदुल, शुद्ध हृदयवाला, पुरुषार्थी **व** शिष्ट होना चाहिए, जिससे हम उस पर यह भरोसा और विश्वास कर सकें कि वह हमें किसी प्रकार का धोखा नहीं देगा।

(4) उनके लिए न तो बड़े-बड़े वीर अद्भुत कार्य कर गए हैं और न बड़े-बड़े ग्रन्थकार ऐसे विचार छोड़ गए हैं, जिनसे मनुष्य जाति के हृदय में सात्त्विकता की उमंगें उठती हैं। उनके लिए फूल-पत्तियों में कोई सौन्दर्य नहीं, झरनों के कल-कल में मधुर संगीत नहीं, अनन्त सागर-तरंगों में गम्भीर रहस्यों का आभास नहीं, उनके भाग्य में सच्चे प्रयत्न और पुरुषार्थ का आनन्द नही। उनके भाग्य में सच्ची प्रीति का सुख और कोमल हृदय की शान्ति नहीं। जिनकी आत्मा अपने इन्द्रिय-विषयों में ही लिप्त है; जिनका हृदय नीचाशयों और कुत्सित विचारों से कलुषित है, ऐसे नाशोन्मुख प्राणियों को दिन-दिन अन्धकार में पतित होते देख कौन ऐसा होगा जो तरस न खाएगा? ऐसे प्राणियों का साथ नहीं करना चाहिए।

अथवा उनके लिए फूल.....नहीं करना चाहिए।

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'में संकलित पाठ 'मित्रता'से उद्धृत है। इसके रचयिता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **<u>रेखांकित अंशों की व्याख्या</u>** - आचार्य शुक्ल के अनुसार आचरणहीन युवकों को प्रकृति में किसी भी प्रकार का सौन्दर्य दिखाई नहीं देता, करते झरनों में उन्हें मधुर संगीत की अनुभूति नहीं होती। सागर की अनन्त लहरों में छिपे जीवनोपयोगी ज्ञान का भी उन्हें कोई आभास नहीं होता। इस प्रकार के दुर्भाग्यशाली युवक अपने सद्प्रयासों एवं पुरुषार्थ पर आधारित उपलब्धि से वंचित होते हैं।

आचरणहीन व्यक्तियों के लिए संसार के महान् व्यक्तियों, उच्च आदर्शों, पुरुषार्थ, सच्चे प्रेम, सात्त्विकता, ज्ञानानुभूति आदि का अस्तित्व ही नहीं होता। ये व्यक्ति सदैव अपने नीच उद्देश्यों की पूर्ति में लगे रहते हैं। बुरे विचारों के कारण इनका हृदय कलुषित हो चुका है। लेखक के अनुसार ऐसे व्यक्ति विनाश की ओर अग्रसर हैं और दया के पात्र हैं। इसलिए ऐसे लोगों की संगति नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न- (iii)लेखक किस व्यक्ति पर तरस खाने की बात कह रहा है?

उत्तर- लेखक उस व्यक्ति पर तरस खाने की बात कह रहा है, जो अपने इन्द्रिय-विषयों में ही लिप्त है और जिसका हृदय नीचाशयों एवं कुत्सित विचारों से कलुषित है।

प्रश्न- (iv)हमें किस प्रकार के प्राणियों का साथ नहीं करना चाहिए?

उत्तर- जिनकी आत्मा अपने इन्द्रिय विषयों में ही लिप्त है; जिनका हृदय नीचाशयों और कुत्सित विचारों से कलुषित है, ऐसे नाशोन्मुख प्राणियों का साथ नहीं करना चाहिए।

(5) कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देनेवाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जाएगी।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के **'गद्य-खण्ड'** में संकलित पाठ **'मित्रता'** से उद्धृत है। इसके रचयिता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंशों की व्याख्या- आ० शुक्ल कहते हैं कि बुरे और दुष्ट लोगों की संगति एक भयंकर बुखार के समान है। जैसे भयानक ज्वर शरीर की सम्पूर्ण शक्ति को कम कर देता है, वैसे ही दुष्टों की संगति

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

में पड़ा व्यक्ति अपनी बुद्धि, विवेक, सदाचार आदि को भी खो बैठता है। बुरी संगति के प्रभाव में पड़कर व्यक्ति अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित का भी ज्ञान खो देता है। विशेष रूप से युवावस्था में जो लोग बुरी संगति में पड़ जाते हैं, वे कभी उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो पाते। सुसंगति एक ऐसी बाँह के समान है, जो गिरे हुए को उठाती है तथा गिरते हुए को सहारा देती है, अर्थात् सत्संगति मिल जाने पर बुरी संगति में पड़ा हुआ व्यक्ति भी उन्नति की ओर बढ़ सकता है।

प्रश्न- (iii)गद्यांश में क्या सन्देश दिया गया है?

उत्तर- गद्यांश में कुसंग को त्यागने और सत्संगति **प्राप्त** करने का सन्देश दिया गया है।

प्रश्न- (iv)कुसंग के ज्वर को सबसे भयानक क्यों कहा गया है?

अथवा **कुसंग का क्या प्रभाव होता है?**

अथवा **कुसंग का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर किस प्रकार पड़ता है?**

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

उत्तर- किसी भी प्रकार का भयानक ज्वर व्यक्ति की शारीरिक शक्ति का नाश करके उसे दुर्बल बनाता है, जबकि कुसंग का ज्वर उसकी नीति, सद्वृत्ति और बुद्धि का नाशकर उसकी आत्मा को दुर्बल बनाता है, इसीलिए कुसंग के ज्वर को सबसे भयानक कहा गया है।

प्रश्न- (v)अच्छी संगति से होनेवाले लाभों को उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर- अच्छी संगति व्यक्ति को सहारा देनेवाली भुजा के समान होती है, जो कि व्यक्ति को अवनति के गड्ढे में गिरने से बचाकर उसे उन्नति की ओर अग्रसर करती है।

प्रश्न- (vi)बुरी संगति से व्यक्ति की क्या हानि होती है?

उत्तर- बुरी संगति व्यक्ति को निरन्तर अवनति के गड्ढे में गिराती जाती है; क्योंकि वह उसकी नीति, सद्वृत्ति और बुद्धि का नाश करती है।

प्रश्न – (vii) युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो उसका क्या परिणाम होगा?

उत्तर- युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो उसका परिणाम यह होगा कि उसे पैरों में बँधी चक्की के समान लगातार अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी।

(6) बहुत से लोग तो इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता, जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनके घड़ीभर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है; क्योंकि उनके ही बीच में ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। इस बात को प्राय: सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं उतनी जल्दी कोई गम्भीर या अच्छी बात नहीं।

प्रश्न- (i) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर - **पाठ** - मित्रता। **लेखक**- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या— कुछ लोग इतनी बुरी मानसिकता के होते हैं कि उन्हें अश्लीलता के सिवाय कुछ सूझता ही नहीं। ऐसे लोग प्रतिपल अश्लील बातें करते हैं। इनका कुछ समय का साथ ही

व्यक्ति की बुद्धि को भ्रष्ट बना देता है। ये लोग ऐसी भद्दी और नीच बातें करते हैं, जिनको भले व्यक्ति द्वारा न तो सुना जाना चाहिए और न ही कहा जाना चाहिए। ये बातें व्यक्ति के पवित्र मन को अपवित्र बना देती हैं।

प्रश्न- (iii)'बहुत से लोग इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते, 'यहाँ पर इसे'शब्द द्वारा किस प्रसंग का संकेत किया गया है?

उत्तर- 'बहुत से लोग इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते', यहाँ पर 'इसे'शब्द द्वारा इंग्लैण्ड के एक विद्वान् के जीवन से सम्बन्धित उस प्रसंग का संकेत किया गया है, जब युवावस्था में उसे राज-दरबारियों में जगह नहीं मिली। इस पर वह जिन्दगीभर अपने भाग्य की सराहना करता रहा।

प्रश्न- (iv)आध्यात्मिक उन्नति के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर- आध्यात्मिक उन्नति के लिए अच्छे लोगों की संगति आवश्यक है।

प्रश्न- (v)बुराई की प्रकृति कैसी होती है?

उत्तर- बुराई की प्रकृति अटल भाव की होती है, यही कारण है कि बुरी बातें हमारे भीतर बहुत दिनों तक टिकती हैं।

प्रश्न- (vi)व्यक्ति पर बुरी बात का प्रभाव जल्दी होता है, इसे उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- व्यक्ति पर बुरी बात का प्रभाव जल्दी होता है, इसीलिए भद्दे और फूहड़ गीत जितनी जल्दी याद होते हैं, उतनी जल्दी अच्छी बातें याद नहीं होतीं।

(7) सावधान रहो, ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा। अथवा **तुम्हारे चरित्र - बल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें बकनेवाले आगे चलकर आप सुधर जायँगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता है कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जायगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी; क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है! तुम्हारा विवेक कुंठित हो जायगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जायगी। अन्त में होते-**

होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे; अतः हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगत की छूत से बचो।

अथवा **जब एक बार.....छूत से बचो।**

अथवा **जब एक बार .....रह जाएगी।**

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'मित्रता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न- (iii) रेखांकित अंशों की व्याख्या- जब मनुष्य किसी बुराई की ओर एक कदम बढ़ा देता है और वह उस बुराई को एक बार अपना लेता है तो वह फिर यह सोचना छोड़ देता है कि वह जिस बुराई की ओर बढ़ रहा है, उससे उसके चरित्र पर कितना बड़ा कलंक लग सकता है, इससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

और चरित्र का कितना पतन हो सकता है। धीरे-धीरे व्यक्ति बुराइयों का आदी हो जाता है। इस प्रकार बुराई के प्रति व्यक्ति के मन में स्थित घृणा कम होती जाती है।

जब हमारी उचित-अनुचित का निर्णय करनेवाली विवेक-शक्ति समाप्त होती जाती है और हमें भले-बुरे की कोई पहचान नहीं रह जाती। इसके परिणामस्वरूप अन्त में व्यक्ति बुराई का भक्त होकर उसमें लिप्त हो जाता है और उससे उसे कोई चिढ़ अथवा घृणा भी नहीं होती। इसलिए स्वयं को बुराई से बचाए रखने का एकमात्र उपाय यही है कि व्यक्ति को बुरी संगति से बचना चाहिए।

प्रश्न- (iv) लेखक यहाँ किस बात के प्रति सावधान रहने को कहता है?

उत्तर- लेखक उन लोगों के प्रति सावधान रहने को कहता है, जो फूहड़, अश्लील और अपवित्र बातें करते हैं और इन बातों से हमें हँसाना चाहते हैं।

प्रश्न- (v)'कीचड़ में पैर डालने'से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- 'कीचड़ में पैर डालने से तात्पर्य बुराई में प्रवेश करने से है।

प्रश्न- (vi)बुरे लोगों से कब हमारी घृणा कम हो जाएगी?

Gyansindu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

उत्तर- जब हम निरन्तर बुरे लोगों के सम्पर्क में रहते हैं तो हम उनकी बुरी बातों के अभ्यस्त हो जाते हैं, तब उन लोगों के प्रति हमारी घृणा कम हो जाती है।

प्रश्न- (vii)बुरी संगति से व्यक्ति को क्या हानि होती है?

अथवा **विवेक कुंठित हो जाने से मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?**

अथवा **बुरी बातों का क्या प्रभाव पड़ता है?**

उत्तर- बुरी संगति से व्यक्ति का विवेक कुण्ठित हो जाता और उसे भले- की पहचान नहीं रह जाती।

प्रश्न- (viii)लेखक ने हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का क्या उपाय सुझाया है?

अथवा **लेखक ने उपर्युक्त गद्यांश में क्या सन्देश दिया** *अथवा* **सबसे अच्छा उपाय क्या है?**

उत्तर- लेखक ने हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का उपाय बुरी संगत की छूत से बचना सुझाया है।

प्रश्न- (viii) मनुष्य में भले-बुरे की पहचान करने की शक्ति कब आती है?

उत्तर- विवेक उत्पन्न होने पर मनुष्य में भले-बुरे की पहचान करने की शक्ति आती है।

(8) यह कोई बात नहीं कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है। समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं, जो गुण हम में नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों। चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। [801 (DA) 2023]

प्रश्न – (i) उपरोक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

प्रश्न – (ii) गद्यांश के रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- समाज में लोग विभिन्नता देखकर एक-दूसरे की ओर इसलिए आकर्षित होते हैं ताकि उनसे वे उन गुणों का लाभ उठा सकें, जिन गुणों की कमी वे अपने अन्दर महसूस करते हैं; जैसे-निर्बल व्यक्ति बलवान से, धैर्यवान व्यक्ति उत्साही व्यक्ति से मित्रता करना चाहता है।

प्रश्न – (iii) क्या देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं?

उत्तर- समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं, जो गुण हम में नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों।

पद्यांश

(1) चरन-कमल बंदौं हरि राइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कुछ-दरसाइ
बहिरौ सुनै, गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बंदौ तिहिं पाई।।

काव्यगत-सौंदर्य- रस-भक्ति, छन्द-गेय पद,अलंकार-रूपक, भाषा-ब्रज, गुण-माधुर्य।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

   उत्तर- **उपर्युक्त**

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर- **व्याख्या-मैं उस भगवान् के कमलवत् चरणों की वन्दना करता हूँ जिसकी कृपा से लँगड़ा व्यक्ति भी पहाड़ों को लाँघ जाता है। अंधे को सब कुछ दिखलाई पड़ने लगता है। बहरा मनुष्य सब कुछ सुनने लगता है। गूँगा मनुष्य फिर से बोलने लगता है और महादरिद्र व्यक्ति भी अपने सिर पर राजछत्र धारण कर लेता है।** ऐसे सूरदास जी कहते हैं कि सर्वशक्तिमान, करुणामय भगवान् के चरणों की बार-बार वन्दना करता हूँ।

3. **हरि की कृपा से क्या सम्भव हो सकता है?**

उत्तर- हरि की कृपा से लंगड़ा पर्वत को लांघ सकता है, अंधा सब कुछ देख सकता है, बहरा सुन सकता है तथा गूँगा बोल सकता है साथ ही भिखारी राजा बन सकता है।

4. **सूरदास किसके चरणों की वंदना कर रहे हैं?**

उत्तर- सूरदास भगवान श्रीकृष्ण के चरण कमलों की वंदना कर रहे हैं।

(2) अबिगत-गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगे मीठे फल कौ रस, अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरंतर, अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौ अगम- अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति-बिनु, निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातै, सूर सगुन-पद गावै।

काव्यगत सौंदर्य- रस-शांत, छन्द-गेय पद, अलंकार-अनुप्रास, भाषा-ब्रज, गुण-माधुर्य।

1. **'अबिगत' का क्या अर्थ है?**
   उत्तर- नित्य (ईश्वर)
2. **मन और वचन से कौन अगम व अगोचर है?**
   उत्तर-निर्गुण निराकार ब्रह्म
3. **सूर सगुण पद का गायन क्यूँ करने लगते हैं?**
   उत्तर- निर्गुण निराकार ब्रह्म सब प्रकार से अगम्य व अगोचर है। ऐसा सोच कर सूर सगुण पद का गायन करते हैं।
4. **रूप, रेखा, जाति और युक्तिहीन किसे कहा गया है?**
   उत्तर- निर्गुण निराकार ब्रह्म को।
5. **प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर- उपर्युक्त।
6. **रेखांकित पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए-**
   उत्तर- **व्याख्या- सूरदास जी कहते हैं कि निराकार ब्रह्म का वर्णन करना अत्यंत कठिन है। क्योंकि उनकी स्थिति के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। आगे उदाहरण देते हुए सूरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार मीठे**

फल खाने के बाद गूँगा उसका स्वाद नहीं बता सकता। बस केवल अंदर ही अंदर आनंद लेता है। ठीक उसी प्रकार निराकार ब्रह्म की उपासना का आनंद भी भक्त को अंदर ही अंदर प्राप्त होता है। वे किसी से कह नहीं पाते। इन्द्रियाँ भी उसको पाने में असमर्थ हैं। उसे वही जान सकता है, जो उसे प्राप्त कर लेता है। उस निराकार ब्रह्म का न होई रूप है, न पहचान है और न हमें उसके गुणों का ही ज्ञान है, अतः बिना किसी आधार के कहाँ-कहाँ दौड़ते रहें। अन्त में सूरदास कहते हैं कि निर्गुण को सब प्रकार से अगम्य मानकर मैं सगुण ब्रह्म की लीलाओं का वर्णन करता हूँ।

(3) किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कै आँगन, बिम्ब पकरिबै धावत
कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौ, कर सौं पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।
कनक-भूमि पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति
करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।
बाल-दस-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति
अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु को दूध पियावति।

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

काव्यगत सौंदर्य–रस–वात्सल्य, छन्द–गेय पद, अलंकार–उपमा,रूपक, पुनरुक्ति प्रकाश भाषा–ब्रज, गुण–माधुर्य

1. **उपर्युक्त पद्यांश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर–**व्याख्या**– किलकारी मारते हुए श्रीकृष्ण घुटनों के बल आ रहे हैं। नन्द जी के स्वर्ण से बनाए गए और मणियों से युक्त आँगन में श्रीकृष्ण अपनी परछाई को पकड़ने के लिए दौड़ते हैं। अपनी परछाईं को देखकर वे उसे उपने हाथ से पकड़ना चाहते हैं। किलकारियाँ मारते समय उनके आगे के दो दाँत सुशोभित हो रहे हैं। बार–बार वे उन्हें दिखलाते हैं। **स्वर्ण–निर्मित आँगन में श्रीकृष्ण की छाया को देखकर मन में यह उपमान प्रस्तुत होता है कि मानो प्रत्येक मणि में उनके बैठने के लिए पृथ्वी ने कमल का आसन सजा दिया हो। श्रीकृष्ण की बाल–लीला के सुख को देखकर यशोदा बार–बार नन्द जी को बुलाती हैं और अपने आँचल से ढककर सूरदास के स्वामी श्रीकृष्ण को दूध पिलाती है।**
2. **कौन किलकारी मारता हुआ घुटनों के बल आ रहा है?**
   उत्तर– श्री कृष्ण।
3. **अवगाहत और कनक शब्दों का अर्थ लिखिए।**
   उत्तर–अवगाहत–दिखाते हैं, और कनक–स्वर्ण।
4. **अपनी ही छाया को देखकर उसे कौन पकड़ना चाहता है?**
   उत्तर–श्री कृष्ण।

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

5. **हाथ पैरों की छाया कहां पड़ रही है?**
   उत्तर–स्वर्ण जैसी भूमि पर।
6. **पृथ्वी कमल की बैठकी किसके लिए सजाती हैं?**
   उत्तर–बालक श्री कृष्ण के लिए।
7. **नंद बाबा को यशोदा क्यों बुला रही हैं?**
   उत्तर–बालक कृष्ण की दशा एवं उसकी क्रीड़ा को देखकर।
8. **सूर के प्रभु कौन हैं?**
   उत्तर– श्री कृष्ण।
9. **प्रस्तुत पद्यांश में रस, छंद, अलंकार एवं गुण बताइए।**
   उत्तर– उपर्युक्त काव्यगत सौदर्य देखें।

(4) मैं अपनी सब गाइ चरैहौं?
प्रात होत बल कै संग जैहौं, तेरे कहे न रैहौं।
ग्वाल बाल गाइनि के भीतर नैकहुँ डर नहिं लागत।
आज न सोवौं नंद-दुहाई, रैनि रहौंगो जागत।
और ग्वाल सब गाइ चरैहैं, मैं घर बैठे रैहौं?
सूर स्याम तुम सोई रहौ अब, प्रात जान मैं देहौं।।

काव्यगत सौंदर्य– रस-वात्सल्य, छन्द-गेय पद अलंकार-उपमा,रूपक भाषा-ब्रज, गुण-माधुर्य

1. **गाय चराने की जिद कौन कर रहा है?**
   उत्तर-गाय चराने की जिद श्री कृष्ण कर रहें हैं।
2. **नैकहुँ, रैनि, दुहाई आदि शब्दों का अर्थ लिखिए।**
   उत्तर-नैकहूं-तनिक भी, रैनि-रात्रि, दुहाई-शपथ।
3. **"सूर स्याम तुम सोइ रहौ अब, प्रात जान मैं देहौं" यह कौन किससे कह रहा है?**
   उत्तर- माता यशोदा श्री कृष्ण से कह रही हैं।
4. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-व्याख्या- **रेखांकित पद्यांश में बालक कृष्ण अपनी मां यशोदा से हठ कर रहें है कि मैया मैं अपनी सभी गाय चराने के लिए जाऊँगा। कृष्ण आगे कहते हैं कि सुबह होते ही बलराम भैया के साथ गाय चराने जाऊँगा और आपके रोकने से नहीं रुकूंगा। मुझे ग्वाल-बालों और गायों के मध्य रहने में तनिक भी डर नहीं लगता है।** मैं आज नन्द बाबा की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं रात-भर नहीं सोऊँगा और जागता रहूँगा, जिससे सुबह ग्वालों के साथ गाय चराने के लिए जा सकूँ। मुझे यह बात अच्छी नहीं लगती कि अन्य सभी ग्वाले गाय चराने के लिए जंगल में जाएँ और मैं घर पर बैठा रहूँ। ऐसा कैसे हो सकता है? इतना सुनकर माता यशोदा ने कृष्ण को विश्वास दिलाया और कहा कि हे पुत्र! अब तुम सो जाओ, सुबह होने पर मैं तुम्हें गाय चराने के लिए अवश्य भेज दूँगी।

5. **प्रस्तुत पद्यांश में रस, छन्द, भाषा, अलंकार एवं गुण बताइए।**

उत्तर- उपर्युक्त काव्यगत सौन्दर्य देखें।

(5) मैया हौं न चरैहौं गाइ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसो, मेरे पाइ पिराइ।
जौं न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, उपनी सौंइँ दिवाइ।
यह सुनि माई जसोदा ग्वालिन, गारी देति रिसाइ।
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ।

सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–वात्सल्य, छन्द–गेय पद अलंकार–अनुप्रास, भाषा–ब्रज, गुण–प्रसाद।

1. **प्रस्तुत पद्यांश में किन दो लोगों के साथ वार्तालाप चल रहा है?**
   उत्तर–माता यशोदा तथा श्री कृष्ण में वार्तालाप चल रहा है।
2. **सभी ग्वाल–बाल किस से गाय घिराते हैं?**
   उत्तर–सभी ग्वाल बाल श्री कृष्ण से गाय घिरवाते हैं।
3. **पत्याहि, रिसाइ, रिंगाइ आदि शब्दों के अर्थ लिखिए।**
   उत्तर–पत्याहि–विश्वास, रिसाइ–क्रोधित, रिंगाइ–दौड़ाकर।
4. **ग्वालो को क्रोधित होकर कौन गाली देता है?**
   उत्तर– माता यशोदा।
5. **प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर– उपर्युक्त।
6. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर– व्याख्या– प्रस्तुत पद्यांश में बालक कृष्ण अपनी माता यशोदा से कह रहे हैं कि मैय्या अब मैं गायों को चराने नहीं जाऊँगा। वहाँ पर सारे ग्वाल मुझसे ही अपनी गायों को घेरने के लिए कहते हैं, इधर–उधर दौड़ते–दौड़ते

मेरे पांवों में दर्द होने लगता है। श्री कृष्ण कहते हैं कि मैय्या अगर आपको मुझ पर विश्वास नहीं है तो आप बलराम भैया को अपनी कसम खिलाकर पूछ लो। अपने जिगर के टुकड़े की इन बातों को सुनकर माता यशोदा को ग्वाल-बालों पर गुस्सा आ जाता है, और वै उन्हें गाली देने लगती हैं। यशोदा माता कहती हैं कि मै अपने पुत्र को वन में केवल मन बहलाने के लिए भेजती हूँ। वहाँ मेरे बच्चे को सभी ग्वाल-बाल मिलकर परेशान करते हैं अर्थात इधर-उधर दौड़ाते हैं।

(6) सखी री, मुरली लीजै चोरि।
जिनि गुपाल कीन्हे अपनैं बस, प्रीति सबनि की तोरि।।
छिन इक घर-भीतर, निसि-बासर, धरत न कबहूँ छोरि।
कबहूँ कर, कबहूँ अधरनि, कटि कबहूँ खोसत जोरि।।
ना जानौं कछु मेलि मोहिनी, राखे अँग-अँग भोरि।
सूरदास, प्रभु कौ मन सजनी, बंध्यौ राग की डोर।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-श्रृंगार, छन्द-गेय पद, अलंकार-अनुप्रास, भाषा-ब्रज, गुण-माधुर्य।

1. श्री कृष्ण की मुरली चुराने के लिए कौन कह रहा है?

उत्तर- गोपिकाएँ

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

2. **गोपाल श्री कृष्ण को अपने वश में किसने कर लिया है?**
उत्तर- बांसुरी ने
3. **श्री कृष्ण किसे कभी छोड़कर नहीं रखते?**
उत्तर- श्री कृष्ण बांसुरी को छोड़कर नहीं रखते।
4. **घर-भीतर, दिन-रात श्री कृष्ण किसे साथ में रखते हैं।**
उत्तर- मुरली अथवा बांसुरी को।
5. **प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
उत्तर- उपर्युक्त।
6. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
उत्तर- व्याख्या- **गोपियाँ श्री कृष्ण की वंशी को अपनी बैरी (सौतन) समझती हैं। एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि हे सखी! अब हमें श्री कृष्ण की यह मुरली चुरा लेनी चाहिए, क्योंकि इस मुरली ने गोपाल को अपनी ओर आकर्षित कर अपने वश में कर लिया है और श्रीकृष्ण भी मुरली के वशीभूत होकर हम सभी को भुला बैठे हैं।** कृष्ण घर के भीतर हों या बाहर, कभी क्षणभर को भी मुरली नहीं छोड़ते। कभी हाथ में रखते हैं तो कभी होंठो पर और कभी कमर में खोंस लेते हैं। इस तरह से श्री

Gyansindu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

कृष्ण उसे कभी भी अपने से दूर नहीं होने देते। यह हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि वंशी ने कौन-सा मोहिनी मन्त्र श्रीकृष्ण पर चला दिया है, जिससे श्रीकृष्ण पूर्णरूप से उसके वश में हो गये हैं। सूरदास जी कहते हैं कि गोपी कह रही है सजनी! इस वंशी ने श्रीकृष्ण का मन प्रेम की डोरी से बाँध कर कैद कर लिया है।

(7) ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
वृन्दावन गोकुल बन उपवन, सघन कुंज की छाँही
प्रात समय माता जसुमति अरू नंद देखि सुख पावत
माखन रोटी दह्यो सजायौ, अति हित साथ खवावत।।
गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत, सब दिन हँसत सिरात
सूरदास धनि-धनि ब्रजवासी, जिनसौ हित जदु-तात।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-वियोग श्रृंगार, छन्द-गेय पद, अलंकार-अनुप्रास, भाषा-ब्रज, गुण-प्रसाद।

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–**व्याख्या– प्रस्तुत पद में सूरदास जी कह रहे हैं कि श्रीकृष्ण ने उद्धव से ब्रजवासियों की दीन दशा सुनी और उन्हीं के ध्यान में खो गये। वे उद्धव से कहते हैं कि मैं ब्रज को भूल नहीं पाता हूँ। वृन्दावन और गोकुल के वन–उपवन सभी मुझे याद आते रहते हैं। वहाँ के घने कुंजो की छाया को भी मैं भूल नहीं पाता। हे उद्धव! नन्द बाबा और यशोदा मैय्या को देखकर मुझे जो सुख मिलता था, वह मुझे रह–रहकर याद आता है।** वे मुझे मक्खन, रोटी और भली प्रकार से जमाया हुआ दही अत्यधिक प्रेम से खिलाती थी अर्थात् माता यशोदा मुझसे बहुत प्यार करती थीं। ब्रज की गोपियों और ग्वाल–बालों के साथ खेलते हुए मेरे सभी दिन हँसते हुए बीता करते थे। ये सभी बातें मुझे बहुत याद आती हैं। अर्थात् बचपन में ब्रज में बीते पलों को भूल नहीं पा रहे हैं। सूरदास जी ब्रजवासियों को धन्य मानते हैं। और उनके भाग्य की सराहना करते हैं, क्योंकि श्रीकृष्ण को उनके हितों की चिन्ता है और श्रीकृष्ण इन ब्रजवासियों को प्रतिक्षण ध्यान करते हैं।

3. किसे ब्रज भुलाए नहीं भूलता?

उत्तर–श्रीकृष्ण को ब्रज भुलाए नहीं भूलता।

4. यशोदा माता और नंद बाबा को कौन देखकर सुख प्राप्त करते थे?

उत्तर–श्रीकृष्ण जी देखकर सुख प्राप्त करते थे।

5. **माखन, रोटी, दही, मट्ठा इत्यादि प्रेम के साथ श्री कृष्ण को कौन खिलाता था?**
   उत्तर–माता यशोदा तथा नंदबाबा।
6. **श्री कृष्ण का दिन किस प्रकार समाप्त होता था?**
   उत्तर–गोपी, ग्वाल–बालों के साथ खेलते हुए श्री कृष्ण का दिन समाप्त होता था।

(8) ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस।।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यों देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्याम सुन्दर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारे नंदनंदन बिनु, और नहीं जगदीस।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–वियोग, श्रृंगार, छन्द–गेय पद, अलंकार–अनुप्रास, भाषा–ब्रज, गुण–प्रसाद, माधुर्य।

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   उत्तर- उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर-व्याख्या-**गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव! हमारे पास दस-बीस मन नहीं हैं। हमारे पास तो एक ही मन था, वह भी श्रीकृष्ण के साथ चला गया। अब हम किस मन से तुम्हारे निर्गुण ब्रह्म की आराधना करें?** श्रीकृष्ण के बिना हमारी इन्द्रियाँ उसी प्रकार शिथिल अर्थात् शक्तिहीन और निर्बल हो गई हैं जैसे बिना सिर वाला शरीर शिथिल और बेकार हो जाता है। श्रीकृष्ण के लौटने की आशा में ही हमारे शरीर में श्वास चल रही है और इसी आशा में हम करोड़ो वर्षों तक जीवित रह सकती हैं। हे उद्धव! आप तो परम् सुन्दर श्रीकृष्ण के मित्र हो और सभी प्रकार के योग के स्वामी हो, अर्थात आप ही श्रीकृष्ण से हमारा मिलन करा सकते हैं। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियों ने उद्धव को स्पष्टरूप से बता दिया कि नन्द जी के पुत्र श्रीकृष्ण के अतिरिक्त हमारा कोई और ईश्वर नहीं है, अर्थात श्रीकृष्ण ही हमारे एक मात्र आराध्य हैं।
3. **प्रस्तुत पद्यांश में किन के बीच वार्तालाप हो रहा है?**
   उत्तर- उद्धव तथा गोपियों के बीच।

4. **उद्धव को किसके ईश्वर बताया गया है?**
   उत्तर- उद्धव को सम्पूर्ण योग साधना का ईश्वर बताया गया है।
5. **श्री कृष्ण के बिना किनकी इंद्रियां शिथिल हो गई हैं?**
   उत्तर- गोपिकाओं की।
6. **"उद्धव हमारे मन दस बीस नहीं हैं। "ऐसा कौन कह रहा है?**
   उत्तर-गोपिकाएँ कह नही हैं।
7. **नंदनंदन किसे कहा गया है?**
   उत्तर- नंदनंदन श्री कृष्ण को कहा गया है।
8. **प्रस्तुत पद्यांश में रस, छंद, अलंकार एवं गुण बताइए।**
   ☞ उत्तर- काव्यगत सौन्दर्य के अन्तर्गत देखें।
9. **"इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।"**
   उपर्युक्त पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए।
   उत्तर- उपर्युक्त पंक्ति में उपमा अलंकार है।

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

(9) उधौ जाहु तुमहिं हम जाने।
स्याम तुमहिं ह्याँ कौ नहिं पठयौ, तुम हौ बीच भुलाने।।
ब्रज नारिनि सौं जोग कहत हौं, बात कहत न लजाने।
बड़े लोग न विवेक तुम्हारे, ऐसे भए अयाने।।
हमसौं कही लई हम सहि कै, जिय गुनि लेहु सयाने।
कहँ अबला कहँ दसा दिगंबर, मष्ट करौ पहिचाने।।
सांच कहौं तुमको अपनी सौं, बूझति बात निदाने।
सूर स्याम जब तुमहिं पठायौ, तब नैकहुँ मुसकाने।

काव्यगत सौंदर्य–रस–श्रृंगार, छन्द–गेय पद, अलंकार–अनुप्रास, भाषा–ब्रज, गुण–प्रसाद।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर–उपर्युक्त
2. **प्रस्तुत पद्यांश में कौन किससे कह रहा है?**

उत्तर- गोपियां उद्धव से कह रही हैं।

3. **गोपियों किसके बारे में पूछ रही हैं?**

उत्तर- श्री कृष्ण के बारे में पूछ रही हैं।

4. **योग साधना की बातें कौन कर रहा है?**

उत्तर- योग साधना की बातें उद्धव कर रहे हैं।

5. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

6. उत्तर-गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि तुम यहाँ से वापस चले जाओ। हम तुम्हें समझ गयी हैं। श्याम ने तुम्हें यहाँ नहीं भेजा है। तुम स्वयं बीच से रास्ता भूलकर यहाँ आ गये हो। ब्रज की नारियों से योग की बात करते हुए तुम्हें लज्जा नहीं आ रही है। तुम बुद्धिमान और ज्ञानी होगे, परन्तु हमें ऐसा लगता है कि तुममें विवेक नहीं है, नहीं तो तुम ऐसी अज्ञानतापूर्ण बातें हमसे क्यों करते? तुम अच्छी प्रकार मन में विचार लो कि **हमसे ऐसा कह दिया तो कह दिया, अब ब्रज में किसी अन्य से ऐसी बात न कहना। हमने तो सहन भी कर लिया, कोई दूसरी गोपी इसे सहन नहीं करेगी। कहाँ हम अबला नारियाँ और कहाँ योग की नग्न अवस्था, अब तुम चुप हो जाओ और सोच-समझकर बात कहो। हम तुमसे एक अन्तिम सवाल पूछती हैं, सच-सच बताना, तुम्हें अपनी कसम देती हूँ, सूरदास जी कहते हैं कि**

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

गोपियाँ उद्धव से पूछ रही हैं कि जब श्रीकृष्ण ने तुमको यहाँ भेजा था, उस समय वे थोड़ा-सा मुस्कराये थे या नहीं?

(10) निरगुन कौन देश कौ वासी ?
मधुकर कहि समुझाय सौंह दै, बूझति साँच न हाँसी।
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी?
कैसो बरन, भेष है कैसो, किहिं रस मैं अभिलाषी?
पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जौ रे करैगौ गाँसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी।।

काव्यगत सौंदर्य–रस-वियोग श्रृंगार, छन्द-गेय पद, अलंकार-अनुप्रास, भाषा-ब्रज, गुण-माधुर्य।

1. प्रस्तुत पद्यांश में कौन किससे प्रश्न कर रहा है?

उत्तर-उद्धव से गोपियां प्रश्न कर रही हैं।

2. 'मधुकर' का अर्थ बताइए।

उत्तर–प्रस्तुत पद्यांश में मधुकर उद्धव को कहा गया है, मधुकर का शाब्दिक अर्थ भंवरा (भ्रमर) होता है।

3. गोपियां किसके माता, पिता, स्त्री आदि के बारे में पूछ रही हैं?

उत्तर–गोपियां निर्गुण ब्रह्म की माता-पिता, स्त्री आदि के बारे में पूछ रही हैं।

4. गाँसी व बरन शब्दों का अर्थ बताइए।

उत्तर–गांसी–छल, बरन–रंग।

5. पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर–उपर्युक्त

6. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–व्याख्या–प्रस्तुत पद में जब उद्धव गोपियों को निराकार ब्रह्म की आराधना करने को कहते हैं तब गोपियाँ 'भ्रमर' की अन्योक्ति से उद्धव को सम्बोधित करती हुई पूछती हैं कि हे उद्धव! तुम यह बताओ तुम्हारा वह निर्गुण ब्रह्म किस देश का रहने वाला है? हम आपको कसम दिलाकर सच-सच पूछ रही हैं, कोई हँसी नहीं कर रही हैं। आप यह बतलाओ कि उस निर्गुण ब्रह्म का रंग कैसा है? उसकी

वेश-भूषा कैसी है? और उसकी किस रस में रूचि है? गोपियाँ उद्धव को चेतावनी देती हुई कहती हैं कि हमें सभी बातों का ठीक-ठीक उत्तर देना। **यदि सही बात बताने में जरा भी छल-कपट करोगे तो अपने किये का फल अवश्य पाओगे। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियों के ऐसे प्रश्नों को सुनकर ज्ञानी उद्धव ठगे-से रह गये और उनका सारा ज्ञान-गर्व अनपढ़ गोपियों के सामने नष्ट हो गया।**

(11) संदेसौं देवकी सौं कहियौ।
हौं तो धाइ तिहारे सुत की, मया करत ही रहियौ।।
जदपि टेव तुम जानति उनकी, तऊ मोहिं कहि आवै।
प्रात होत मेरे लाल लड़ैतैं, माखन रोटी भावै।।
तेल उबटनौ अरू तातो जल, ताहि देखि भजि जाते।
जोइ-जोइ माँगत सोइ-सोइ देती, क्रम क्रम करि कै न्हाते।।
सूर पथिक सुन मोहिं रैनि दिन, बढ़यौ रहत उर सोच।
मेरौ अलक लड़ैतो मोहन, ह्वैहै करत सँकोच।।

काव्यगत सौंदर्य-रस- वात्सल्य, छन्द-गेय पद, अलंकार-अनुप्रास, भाषा- ब्रज, गुण- माधुर्य।

1. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर–व्याख्या–यशोदा उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव! तुम मेरा यह सन्देश देवकी से कहना। उनसे कहना कि मैं तो तुम्हारे पुत्र की धाय हूँ; अतः मुझ पर कृपा करती रहना। यद्यपि आप श्रीकृष्ण की आदत जानती हैं, तथापि मैं भी कुछ कहना चाहती हूँ । सवेरा होते ही मेरे लाड़ले कृष्ण को माखन–रोटी अच्छी लगती हैं। **उबटन, तेल और गर्म पानी को देखते ही श्रीकृष्ण भाग जाते थे। वे जो– कुछ माँगते, मैं वही देती थी। इस प्रकार वे धीरे–धीरे स्नान करते थे। यशोदा की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए सूरदास कहते हैं कि यशोदा को रात–दिन यही चिन्ता सताती रहती है कि वहाँ मेरे लाड़ले श्रीकृष्ण संकोच करते होंगे।**

2. **देवकी को संदेश कौन भेज रहा है?**

उत्तर– देवकी को संदेश माता यशोदा भेज रही हैं।

3. **देवकी के पुत्र की धाय कौन है?**

उत्तर– देवकी के पुत्र श्री कृष्ण की धाय माता यशोदा है।

4. **तातो, मया, टेव और अलक लड़ैतो शब्द के अर्थ लिखिए।**

उत्तर– तातो–गर्म, मया–दया, टेव– आदत, अलक लड़ैतो–लाड़ला।

5. गर्म जल और उबटन देखकर कौन भाग जाता है?

उत्तर- गर्म जल और उबटन देखकर श्री कृष्ण भाग जाते हैं।

6. माता यशोदा किसकी सारी अभिलाषाएँ पूरी करती हैं?

उत्तर- माता यशोदा श्रीकृष्ण सारी अभिलाषाएं पूरी करती हैं।

7. प्रस्तुत पद्यांश में रस, छंद, अलंकारएवं गुण बताइए।

उत्तर- उपर्युक्त काव्यगत सौंदर्य के अन्तर्गत देखें।

व्याकरण

द्विगु समास

परिभाषा-जिस सामासिक पद में प्रथम पद संख्यावाचक हो एवं द्वितीय पद संज्ञा शब्द हो तथा समस्त पद समूह का बोध करवाए तो उसे 'द्विगु समास' कहते हैं। द्विगु समास का समास-विग्रह करते समय दोनों पदों को लिख कर अन्त में 'का समूह' या 'का समाहार' लिखते हैं।

1. **अष्टकोण-** आठ कोणों का समूह
2. **अष्टग्रह-** आठ ग्रहों का समूह
3. **अष्टाध्यायी-** आठ अध्यायों का समाहार
4. **चौपाया/चारपाई-** चार पावों का समूह
5. **चौमासा-** चार मासों का समूह

6. **चौराहा**– चार राहों का समूह
7. **चतुर्वेद**– चार वेदों का समूह
8. **तिरंगा**– तीन रंगो का समाहार
9. **त्रिकोण**– तीन कोणों का समूह
10. **त्रिभुज**– तीन भुजाओं का समूह
11. **त्रिलोकी**– तीन लोकों का समाहार
12. **त्रिभुवन**– तीन भुवनों का समाहार
13. **दशावतार**– दस अवतारों का समाहार
14. **दोपहर** – दो पहरों का समाहार
15. **दोराहा** – दो राहों का समूह
16. **त्रिवेणी**– तीन वेणियों का समाहार
17. **पंचपल्लव**– पांच पल्लवों का समूह
18. **पंचतंत्र**– पांच तंत्रों का समाहार
19. **पंचपात्र**– पांच पात्रों का समूह

20.**पंचवटी** –पांच वटों का समूह
21.**बारहमासा**–बारह महीनों का समूह
22.**शताब्दी**– शत (सौ) अब्दो (वर्षों) का समूह
23.**षट्कोण**– छह कोणों का समूह
24.**सतसई**– सात सौ दोहों का समूह
25.**सप्तद्वीप** – सात द्वीपों का समूह
26.**सप्तधान्य** –सात दिनों का समूह
27.**सप्तर्षि** – सात ऋषियों का समूह
28.**त्रिफला**– तीन फलों का समाहार
29.**त्रिदेव**– तीन देवों का समाहार
30.**सप्तसिंधु**– सात नदियों का समूह
31.**नवग्रह**– नव ग्रहों का समूह
32.**नवरत्न** – नव रत्नो का समाहार

संस्कृत

- न केवलं भारतीयाः अपितु वैदेशिकाः गीर्वाणवाण्याः अध्ययनाय अत्र आगच्छन्ति, निःशुल्कं च विद्यां गृह्णन्ति। अत्र हिन्दूविश्वविद्यालयः, संस्कृतविश्वविद्यालयः, काशीविद्यापीठम् इत्येते त्रयः विश्वविद्यालयाः सन्ति, येषु नवीनानां प्राचीनानाञ्च ज्ञानविज्ञानविषयाणाम् अध्ययनं प्रचलितः। एषा नगरी भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतभाषायाश्च केन्द्रस्थलम् अस्ति।

  हिंदी अनुवाद - न केवल भारतीय अपितु विदेशी भी देववाणी - संस्कृत के अध्ययन के लिए यहाँ आते हैं और निःशुल्क विद्या ग्रहण करते हैं। यहाँ हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय

और काशी विद्यापीठ - ये तीन विश्वविद्यालय हैं, जिनमें नवीन और प्राचीन ज्ञान - विज्ञान के विषयों का अध्ययन चलता रहता है। यह नगरी भारतीय संस्कृति और संस्कृत - भाषा का केन्द्र - स्थल है।

- **इत एव संस्कृतवाङ्मयस्य संस्कृतेश्च आलोकः सर्वत्र प्रसृतः। मुगलयुवराजः दाराशिकोहः अत्रागत्य भारतीय - दर्शन - शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत्। स तेषां ज्ञानेन तथा प्रभावितः अभवत्, यत् तेन उपनिषदाम् अनुवादः पारसीभाषायां कारितः। इयं नगरी विविधधर्माणां संगमस्थली। महात्मा बुद्धः, तीर्थङ्करः पार्श्वनाथः, शङ्कराचार्यः, कबीरः, गोस्वामी तुलसीदासः, अन्ये च बहवः महात्मानः अत्रागत्य स्वीयान् विचारान् प्रासारयन्।**

  हिंदी अनुवाद - यहीं से संस्कृत - साहित्य और संस्कृति का प्रकाश सर्वत्र फैला है। मुगल युवराज दारा शिकोह ने यहाँ आकर भारतीय दर्शनशास्त्रों का अध्ययन किया था।

वह उनके ज्ञान से ऐसा प्रभावित हुआ कि उसने उपनिषदों का अनुवाद फारसी भाषा में कराया। यह नगरी अनेक धर्मों की संगमस्थली है। महात्मा बुद्ध, तीर्थंकर पार्श्वनाथ, शंकराचार्य, कबीर, गोस्वामी तुलसीदास और दूसरे अनेक महात्माओं ने यहाँ आकर अपने विचारों का प्रसार किया।

- **न केवलं दर्शने, साहित्ये, धर्मे, अपितु कलाक्षेत्रेऽपि इयं नगरी विविधानां कलानां, शिल्पानाञ्च कृते लोके विश्रुता। अत्रत्याः कौशेयशाटिकाः देशे देशे सर्वत्र स्पृह्यन्ते। अत्रत्याः प्रस्तरमूर्तयः प्रथिताः। इयं निजां प्राचीनपरम्पराम् इदानीमपि परिपालयति — तथैव गीयते कविभिः-**

हिंदी अनुवाद - न केवल दर्शन, साहित्य और धर्म में ही अपितु कला के क्षेत्र में भी यह नगरी तरह - तरह की कलाओं और शिल्पों के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। यहाँ की रेशमी साड़ियाँ हर देश में सर्वत्र पसन्द की जाती हैं। यहाँ की पत्थर की मूर्तियाँ प्रसिद्ध हैं। यह अपनी प्राचीन परम्परा का इस समय भी पालन कर रही है। अतएव कवियों के द्वारा गाया गया है –

- **मंङ्गलं मरणं यत्र विभूतिर्यत्र भूषणम्।**
  कौपीनं यत्र कौशेयं सा काशी केनोपमायते।।

  <u>हिंदी अनुवाद -</u> जहाँ मरना कल्याणकारी है, जहाँ भस्म ही आभूषण है और जहाँ लँगोट (ही) रेशमी वस्त्र है, वह काशी किसके द्वारा मापी जा सकती है? (इसकी तुलना किससे की जा सकती है)

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज
अनुशासनेन विद्या
अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात्
मुक्तिः
||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम्||